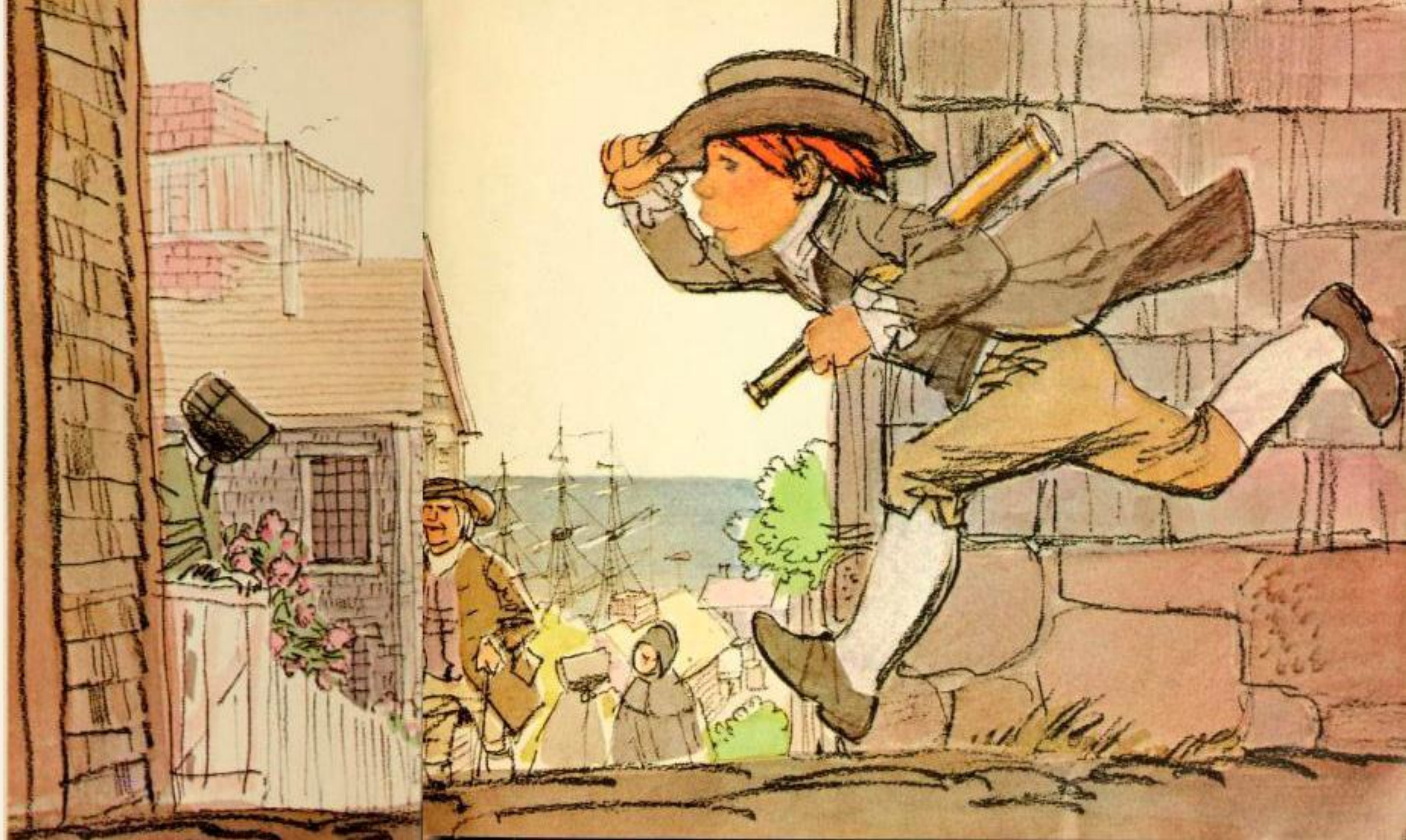
निडर! ओबद्याह



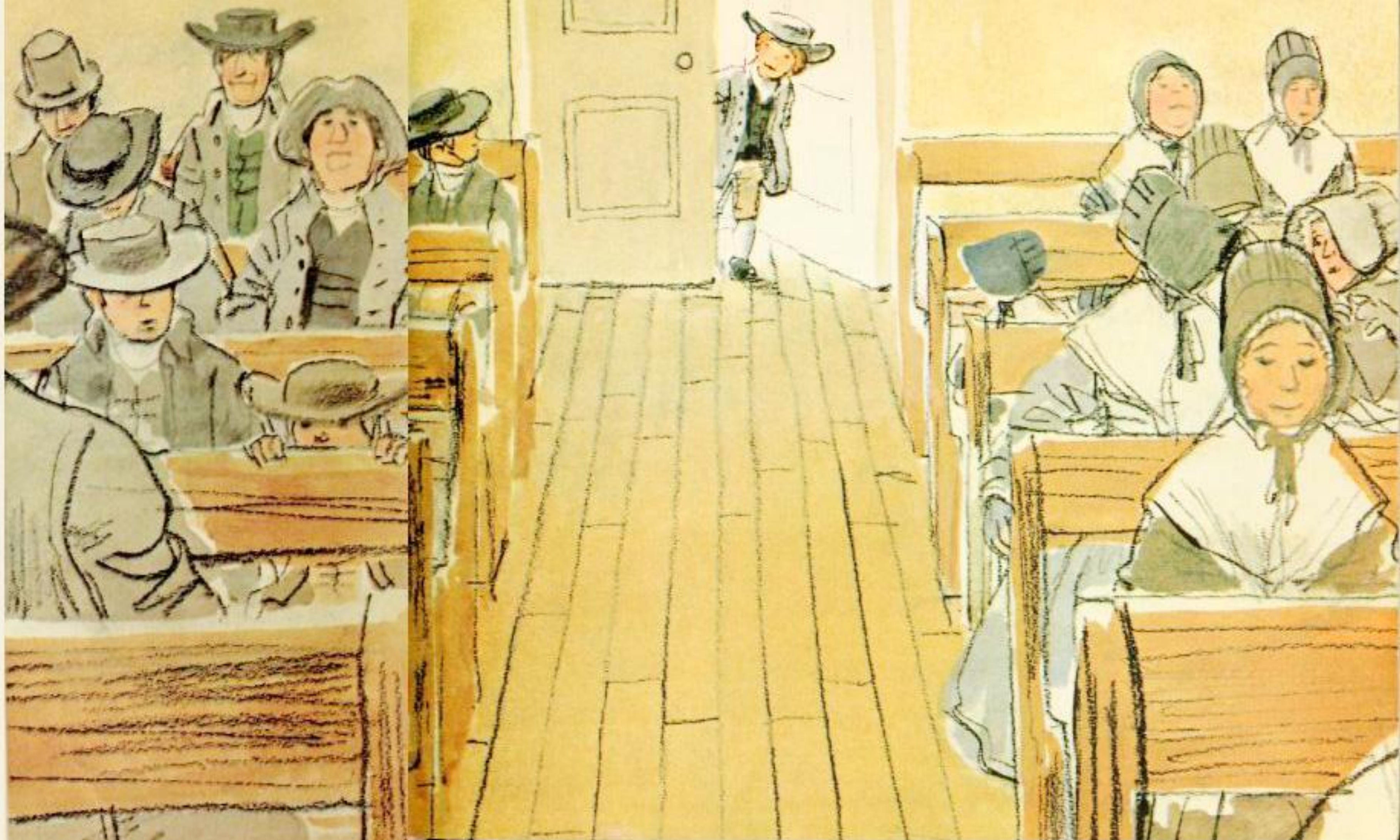
यह ओबद्याह स्टारबक है. वो अपनी नई दूरबीन के साथ घर से निकला है. दूरबीन पीतल की बनी है और वो बहुत सुंदर है.

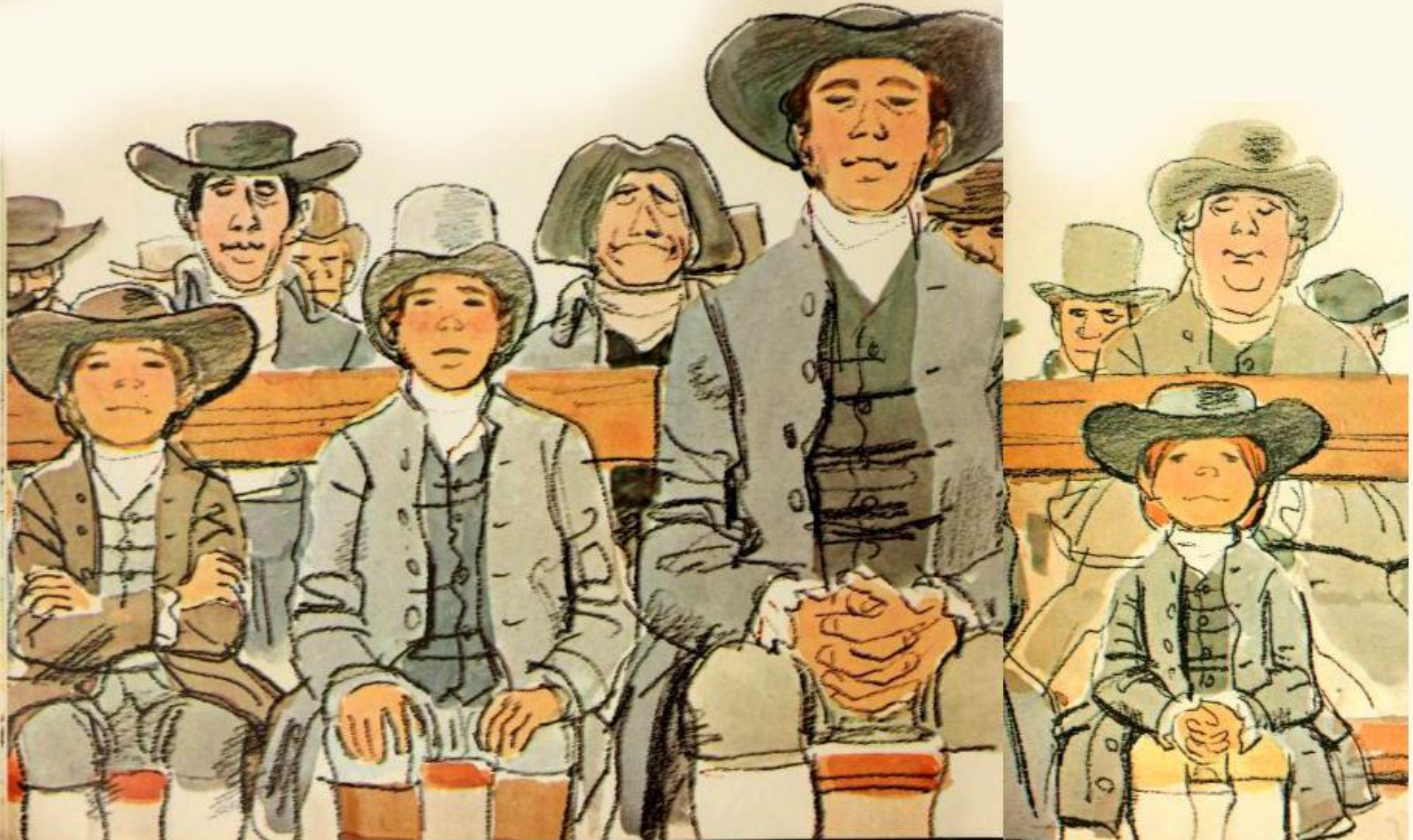




उसके परिवार के बाकी लोग अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनकर चर्च की मीटिंग में जा रहे हैं: पिता, माँ, मोसेस, आसा, रेबेका और रेचल. ओबद्याह रेबेका और रेचल के बीच चलता है. उसे जन्मदिन के उपहार में एक सुंदर नई दूरबीन मिली थी. जब ओबद्याह ने दूरबीन को चर्च की मीटिंग में ले जाने की कोशिश की, तो पिता ने मना किया और फिर ओबद्याह को दूरबीन घर वापस रखनी पड़ी.

नानकुट द्वीप के सभी क्वेकर्स मीटिंग में आए थे. वहां पुरुष एक तरफ बैठे थे और महिलाएं दूसरी तरफ बैठीं थीं. जब ओबद्याह आया, तो मीटिंग शुरू हो चुकी थी. वह पुरुषों के साथ एक लकड़ी की बेंच पर बैठ गया.





पूजा की मीटिंग लंबी और शांत थी. कभी कोई धार्मिक ग्रन्थ पढ़ता या फिर परमेश्वर के बारे में बताता था. ओबद्याह ने परमेश्वर के बारे में सोचने की कोशिश की, लेकिन उसे अपनी चमकदार दूरबीन के बारे में सोचना ज़्यादा आसान लगा. फिर उसे खिड़की के कांच पर एक मक्खी दिखाई दी. अचानक, ओबद्याह को समझ में आया कि वो बड़ा होने पर क्या बनना चाहता था.

वो एक समुद्री डाकू यानि पायरेट बनना चाहता था. वो एक निडर समुद्री डाकू बनना चाहता था, वो सातों समुद्रों में घूमना और गुप्त स्थानों में अपना खज़ाना छिपाना चाहता था. ओबद्याह स्टारबक, सातों समुद्रों का पायरेट! ओबद्याह निडर!





ओबद्याह अपनी नई दूरबीन को मीटिंग में ले नहीं जा सका, पर दूरबीन उसके साथ-साथ बाकी सभी जगह गई : समुद्र के घाट से, बिस्तर तक . . .



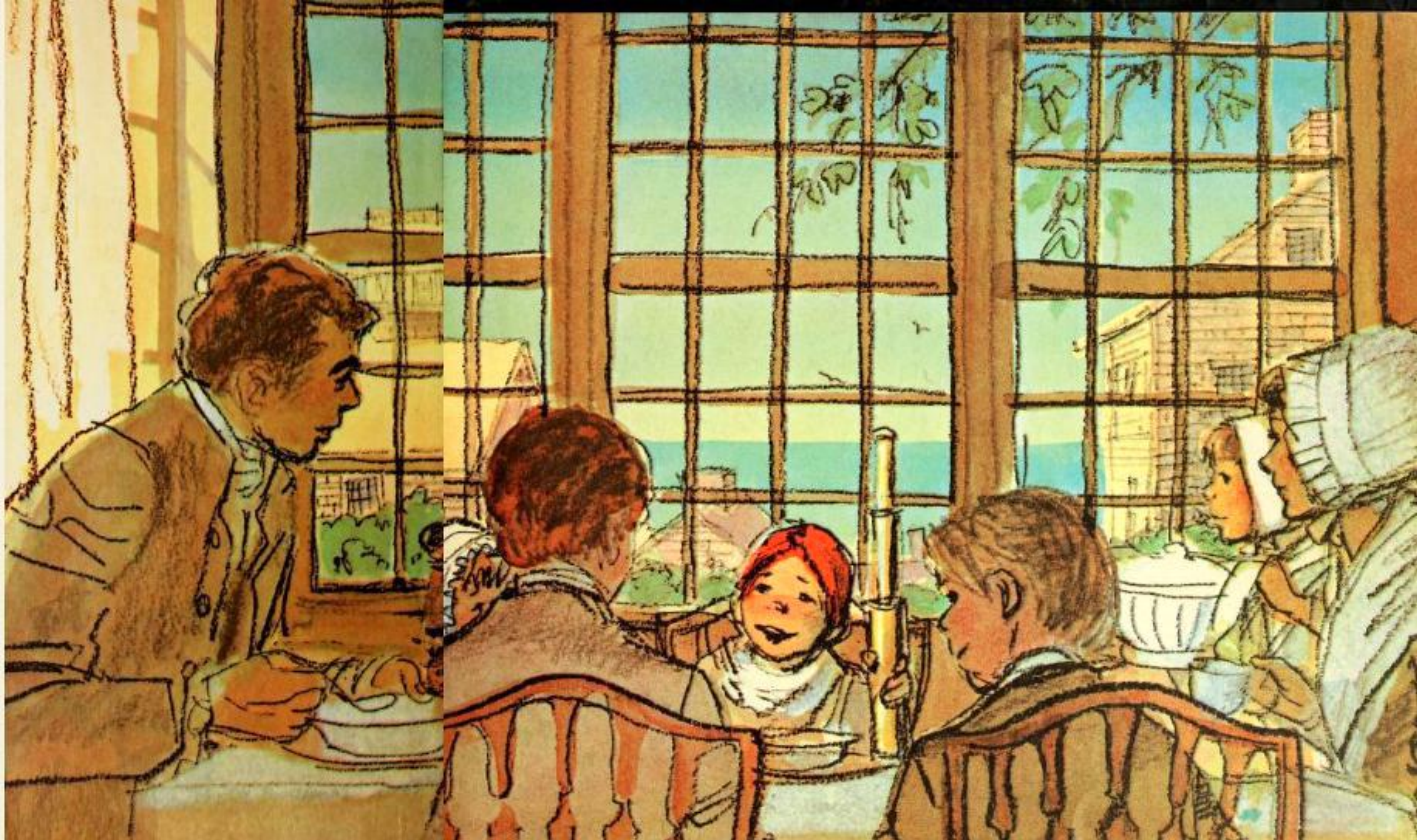
....और खाने की मेज पर भी.

"मैं बड़ा होकर एक समुद्री डाकू बनूँगा," उसने कहा.

मोशे को बड़ा ताज़्ज़ुब हुआ, "क्या तुमने कभी किसी क्वेकर को समुद्री डाकू बनते हुए सुना है?" आसा ने पूछा.

"शायद वो एक दोस्त समुद्री डाकू बन सकता है," माँ ने कहा. यह सुनकर सब लोग हँसे.

पिता ने कहा, "मुझे नहीं लगता कि हमारे स्टारबक परिवार में कभी कोई समुद्री डाकू बना हो. पर ओबद्याह अगर तुम कभी समुद्री डाकू बनो तो फिर एक अच्छे डाकू बनना."





बारिश वाले दिन रेचल ने ओबद्याह से घर-घर खेलने को कहा.

"नहीं!" ओबद्याह ने हेंकड़ी में कहा. "मैं अब बहुत बड़ा हो गया हूँ और अब मैं तुम्हारे साथ वो खेल नहीं खेल सकता."

आँगन में मोसेस और आसा ने सिर्फ लकड़ी का डिब्बा भरा था. रेबेका चूल्हे की राख झाड़ रही थी.

"चलो समुद्री डाकू का खेल खेलते हैं." उसने सुझाव दिया.





"ठीक है," आसा ने कहा. "पहले, मोसेस और मैं मिलकर तुम्हें पकड़ेंगे!" वो दोनों उससे बड़े थे और वे एक नहीं दो थे. रेबेका एक रस्सी और एक कपड़ा लाई. ओबद्याह को रस्सी से बाँधा गया और उसकी आंखों पर पट्टी बांधी गई.

"अब हम तुम्हें कोठरी में बंद करेंगे," उन्होंने कहा.



"यह समुद्री डाकुओं का खेल खेलने का तरीका नहीं है!" ओबद्याह चिल्लाया.

"यह है!" उन्होंने कहा. फिर उन्होंने ओबद्याह को झाड़ू वाली अलमारी में डाला और दरवाजा बंद किया.

समुद्री डाकू बहादुर होते हैं और रोते नहीं हैं. लेकिन ओबद्याह भयभीत था और उसे बहुत रोना आ रहा था. उसने कोठरी के दरवाज़े को बाहर धकेलने की कोशिश की, लेकिन बाहर से किसी ने दरवाजा पकड़कर रखा था.

"बताओ दोस्त! क्या हम इस कुत्ते को मारें, या उसे फांसी से लटकायें?"

वो मोसेस की आवाज़ नहीं थी.

"नहीं, हम उसे डेवी जोन्स के पास भेज देंगे. लकड़ी के तख्ते को बाहर निकालो."

वो आसा की आवाज़ नहीं थी.



बाहर खटपट की आवाज हुई. अंत में दरवाजा खुला. उसे धक्का दिया गया और हिलाया गया. फिर वो एक लकड़ी के बोर्ड पर अस्थिर रूप से खड़ा था.

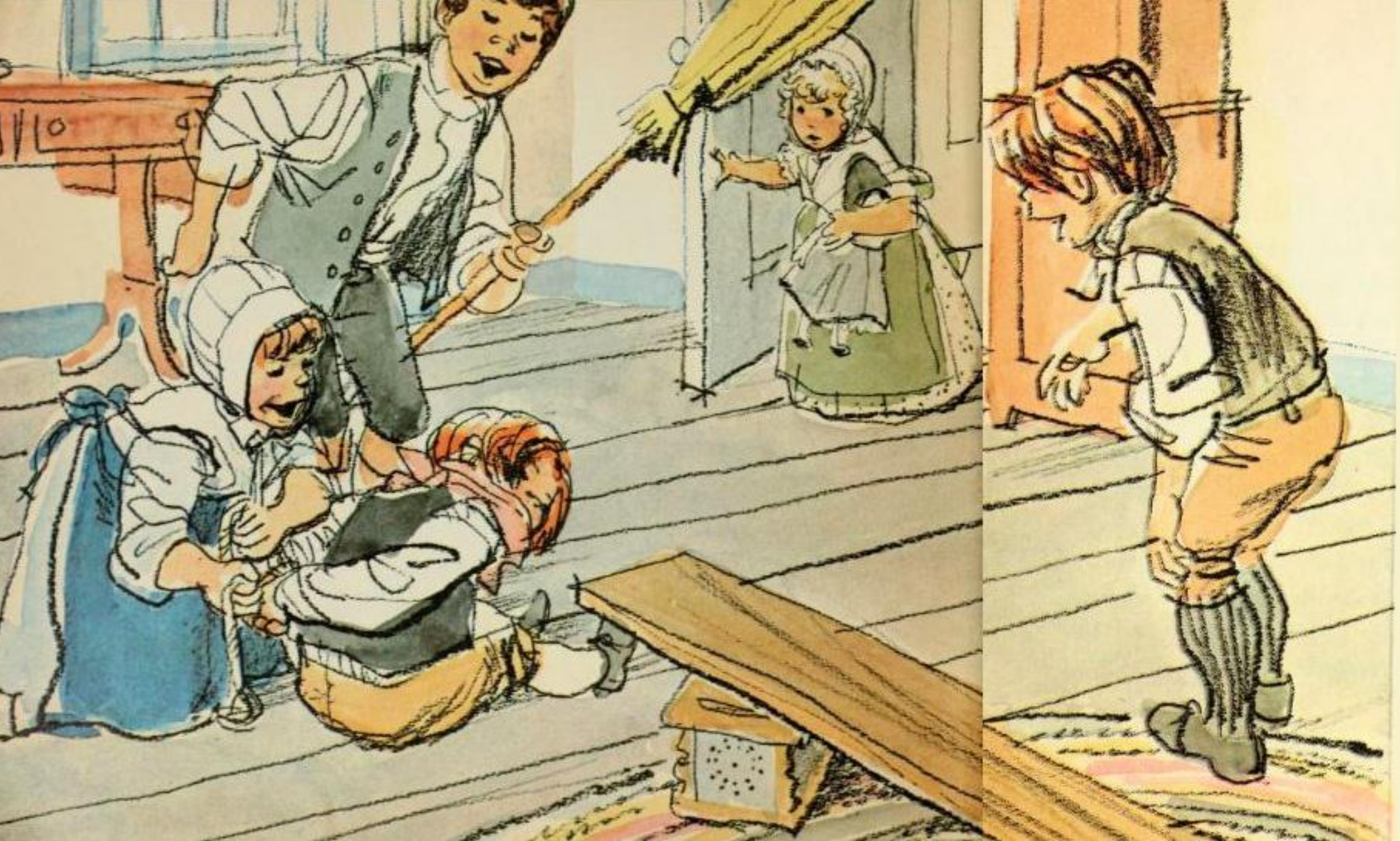
"आगे बढ़ो!" किसी ने कहा.

ओबद्याह वहां से बिल्कुल नहीं हिला.

"उसे एक भाले से मारो!"

किसी ने उसकी पसलियों में गुदगुदी की और फिर वो कूदा.





ओबद्याह खुद को फर्श पर पाकर हैरान हुआ. रेबेका ने उसकी आंखों की पट्टी और रस्सी खोली. तख्ता केवल एक छोटा बोर्ड था. भाला, झाड़ू का हैंडल रहा होगा.

मोसेस और आसा दोनों हँस रहे थे. ओबद्याह को इसमें हंसने की कोई बात नहीं लगी.

दोपहर में बाकी समय, ओबद्याह ने रेचल के साथ घर-घर खेला.

उस रात वो अपनी दूरबीन, खाने की मेज पर नहीं ले गया. वो उसे बिस्तर पर भी नहीं लेकर गया.



अगले दिन ओबद्याह ने पिता के कमरे के सामने से तीन बार आगे-पीछे लेफ्ट-राइट किया. फिर पिता ने उसे देखा और उन्होंने कहा, "आओ, बेटा."

ओबद्याह उनकी डेस्क के बगल में चुपचाप खड़ा रहा. उसे समझ में नहीं आया कि वो कैसे शुरू करे.

"क्या तुम्हें कुछ परेशान कर रहा है?" पिता ने पूछा.

"पिताजी, क्या यह सच है कि समुद्री लुटेरों को तख़्ते पर चलना पड़ता है?"

"हाँ, अगर वे पकड़े गए तो."

"और उन्हें फांसी पर लटकना होता है?"

"हाँ, अगर वे दुष्ट हों, तो."

"फिर . . . फिर मैं समुद्री डाकू नहीं बनना चाहता हूँ, चाहें वे कितने भी बहादुर क्यों न हों."

पिता ने ओबद्याह को उठाकर अपने घुटने पर बैठाया. "समुद्री डाकू वास्तव में बहुत बहादुर नहीं होते हैं, ओबद्याह," उन्होंने कहा. "मैंने एक भी ऐसे समुद्री डाकू के बारे में नहीं सुना जो तुम्हारे दादाजी से अधिक बहादुर हो."

"दादाजी क्या करते थे?"

"उन्होंने चार बार केप ऑफ़ हॉर्न का सफर किया था."

"हॉर्न, वो क्या है?"



"केप हॉर्न, दक्षिण अमेरिका की भूमि की नोक का अंत है. चीनी समुद्र तक पहुंचने के लिए केप हॉर्न होकर जाना पड़ता है, और वो एक बहुत खतरनाक रास्ता है."

"क्यों?"

"क्योंकि वहाँ चट्टानें, बर्फ और बहुत खराब मौसम होता है. वहाँ भयानक तूफान आते हैं. दो बार तुम्हारे दादाजी का जहाज लगभग टूटते-टूटते बचा. लेकिन वो अपने जहाज को सुरक्षित वापिस लाए और उन्होंने एक आदमी भी नहीं खोया. वो इतने बहादुर नाविक थे लोगों ने उन्हें एक बढ़िया उपहार दिया.''



"वो उपहार क्या था?"

"मैं तुम्हें दिखाता हूँ." 'पिता कोने में ऊँची अलमारी के पास गए. सबसे ऊपर की दराज में से उन्होंने एक लाल डिब्बा निकाला और उसे खोला. उसके अंदर एक बेशकीमती और खूबसूरत चीज़ थी.

"एक घड़ी!"

"यह एक साधारण घड़ी नहीं है, बेटा. यह घड़ी विशेष रूप से नाविकों के लिए है. इसे क्रोनो-मीटर कहते हैं. यह एकदम सटीक समय दिखाती है, और यह भी बताती है कि जहाज, समुद्र में कहां पर है. तुम इसे उठाओ और ध्यान से देखो."

ओबद्याह ने उसे बड़े ध्यान से उठाया.

पिता ने कहा, "इसे पलटो, और उसके पीछे देखो."

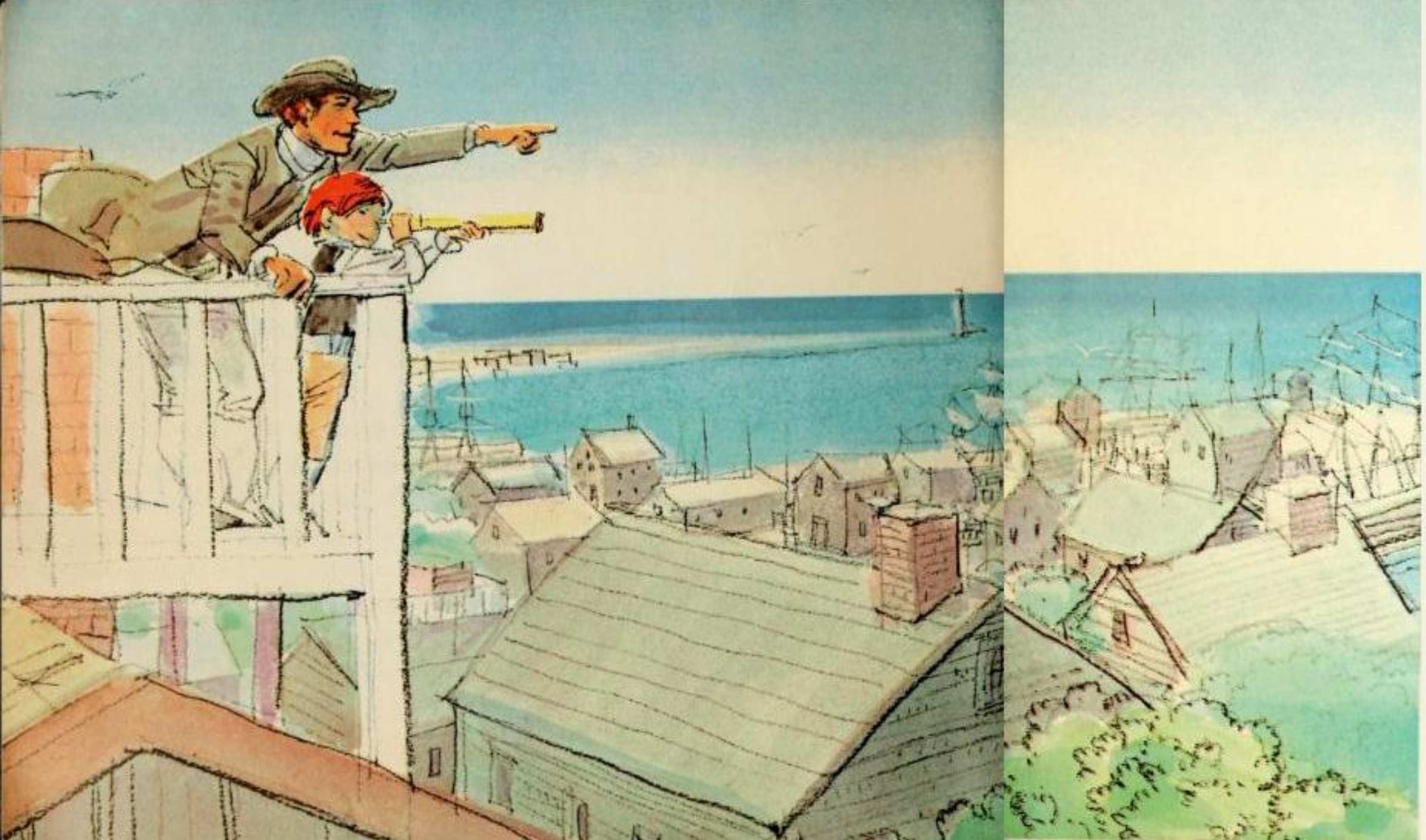


घड़ी के पीछे कुछ लिखा था. ओबद्याह अक्षरों को बहुत अच्छी तरह से नहीं पढ़ सकता था, लेकिन एक शब्द पढ़कर वो उछल पड़ा. " ओबद्याह! वो चिल्लाया. "यह तो मेरा नाम है!"

पिता ने क्रोनो-मीटर लिया और उसे खिड़की तक ले गए जहाँ प्रकाश में वो चमकने लगा. " ओबद्याह स्टारबक," उन्होंने पढ़ा. "रोनावेंट्योर जहाज के बहादुर कप्तान के लिए, जहाज कंपनी की ओर से."

"यह तो मेरा नाम है!"

"ओबद्याह, तुम्हारा नाम, तुम्हारे दादाजी के नाम पर ही रखा गया था. मुझे लगता है कि दादाजी चाहेंगे कि बड़े होकर तुम इस क्रोनो-मीटर के मालिक बनो. फ़िलहाल, मैं इसे वापिस रख दूंगा." पिताजी ने उसे दराज में वापिस रख दिया. "बेटा, आज एक अच्छा दिन है. तुम अपनी दूरबीन को लेकर मेरे साथ छत पर चलो."



यह एक अच्छा दिन था. नानकुट बंदरगाह पर एक व्हेलिंग जहाज लंगर डाल रहा था. ब्रेक-वाटर से दूर, बोस्टन के लिए एक अन्य जहाज रवाना हो रहा था.

"पिताजी केप हॉर्न किस दिशा में है?"

"उस ओर" पिताजी ने इशारा करते हुए कहा.

"फ्रांस से बहुत आगे?"

"बहुत आगे."

"किसी दिन मैं वहां जाऊंगा," ओबद्याह ने कहा.

पिता ने अपना हाथ ओबद्याह के कंधे पर रखा. "मुझे उम्मीद है कि तुम एक दिन वहां ज़रूर जाओगे," उन्होंने कहा.

समाप्त